07. दादी जी के महावाक्य

वर्तमान समय सभी का पुरुषार्थ है हम बाप समान फ़रिश्ता बनें, अव्यक्त बनें। एंजिल्स सभी को बहुत प्यारे लगते हैं। सभी अनुभव करते हैं कि साकारी से आकारी स्थिति बनने में, एंजिल्स बनने में, उस लक्ष्य को धारण करने में कितना सुंदर अनुभव होता है! एंजिल्स की स्थिति कितनी मीठी होती है! साक्षात्कार में भी सभी को विशेष एंजिल्स का अनुभव होता है।

लेकिन हमें आकारी स्थिति में साथ–साथ निराकारी स्थिति का भी विशेष अनुभव करना है। क्योंकि बाप निराकार है, आत्मा निराकार है और हम सबको जाना भी निराकारी दुनिया में है। स्वीट होम को साइलेन्स होम भी कहते हैं वहाँ से ही विष्णुपुरी का गेट खुलता है। आकारी दुनिया से हम वाया होने वाले हैं। परन्तु वाया होंगे भी तब जब संपूर्ण पवित्र बनेंगे। तो एंजिल्स माना ही कम्पलीट प्युअर। कम्पलीट प्युअर बनकर ही शांतिधाम जाना है और विद् ऑनर जाना है।

हम सबकी बुद्धि में यह लक्ष्य है कि हमें ऐसी स्थिति में जाना है जो कोई सज़ा न खानी पड़े। बाबा ने भी कहा है कि लक्ष्य रखो तो लक्षण आयेंगे। लक्ष्य ही है हमें बाबा के समान बन, बाबा के पास बाबा के घर जाना है। हम सब आत्माओं का स्वीट होम वही है।

कई बार कहते हैं कि शांति की गहरी अनुभूति हो। साइलेन्स इज़ पॉवर कहते हैं। तो यह साइलेन्स की अनुभूति, साइलेन्स की पॉवर तब अनुभव होगी जब हमारी यह प्रैक्टिस रहेगी कि हम आत्मा बिन्दु हैं। जितना–जितना हम अपने को निराकारी आत्मा समझेंगे उतना देह का भान मिटता जायेगा। यह देह का भाान बहुत मोटा है। एक है देह का अभिमान रखना, एक है देह का भान रखना। तो न देह के अभिमान में रहना है, न देह का भान में आना है। इन दोनों से अपने को मुक्त कर लेता है। इसका नाम है राजयोग।

न अहम् का अहंकार चाहिए, न अहम् का अभिमान चाहिए, न अहम् का नशा चाहिए। इस अभिमान से, इस अहंकार से खुद को बहुत–बहुत दूर निरहंकारी बनाना है। निरहंकारी बनने का साधन ही है खुद को निराकारी बनाओ। निराकारी स्थिति में जाने से निरहंकारी, निरहंकारी से निर्विकारी बनेंगे।

अच्छा, ओम् शांति।